“कक्षा दसवी के विद्यार्थियों में विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन”

शोधकर्ता–
नाम–घनश्याम
एम.एड. (प्रशिक्षार्थी),
प्रगति महाविद्यालय,
चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.),
पता– म.क्र.213, वार्ड नं.12, मऊ,

बेमेतरा, जिला–बेमेतर्रा (छ.ग.) पिन– 491335,
संपर्क– 7898284514
मेल– ghanshyamtutorial2@gmail.com

शोध निर्देशिका–
नाम– डॉ. सौम्या नैयर
(**प्राचार्य**)
प्रगति महाविद्यालय,
चौबे कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.),
पता– चौबे कॉलोनी, रामकुंड, रायपुर, छत्तीसगढ़ 492001

संपर्क– 9294603002
मेल –principal@pragaticollege.com

सार

यह अध्ययन बेमेतरा ज़िले के बेमेतरा विकासखंड में स्थित शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों पर केंद्रित था। अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि विषय चयन जैसी निर्णायक प्रक्रिया में विद्यार्थियों को किस हद तक निर्देशन की आवश्यकता होती है और यह मार्गदर्शन उनके निर्णयों को किस प्रकार प्रभावित करता है।

शोध में कुल 100 विद्यार्थियों (50 शासकीय व 50 निजी विद्यालयों से) को शामिल किया गया। डॉ. ए. एस. कुलश्रेष्ठ के प्रपत्र प्रारूप के अनुसार, शोध–आधारित तथ्य संकलन एवं विश्लेषण किया गया, जिसमें विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रवृत्तियाँ, विषय चयन से संबंधित व्यवहारिक दशाएँ, तथा उपलब्ध मार्गदर्शन की स्थिति को प्रमुखता से परखा गया।

यह मार्गदर्शन यदि व्यवस्थित, जागरूकता–आधारित और छात्र–केंद्रित हो, तो विद्यार्थी अधिक आत्मनिर्भर, स्पष्ट विचारधारा वाले और करियर के प्रति जागरूक बन सकते हैं।

अनुशंसा की जाती है कि विद्यालयों में करियर मार्गदर्शन की प्रभावी व्यवस्था, शिक्षक प्रशिक्षण, और समय–समय पर शैक्षणिक मार्गदर्शन सत्र आयोजित किए जाएँ, जिससे विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य हेतु सशक्त निर्णय लेने में सहयोग मिल सके।

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की आधारशिला होती है। वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा, बहुविकल्पीय करियर मार्गों और जटिल सामाजिक संरचनाओं का युग है, जिसमें एक विद्यार्थी के लिए उचित विषय चयन जीवन की दिशा तय करने वाला निर्णय बन जाता है। विशेष रूप से कक्षा दसवीं के विद्यार्थी, जो किशोरावस्था के संवेदनशील मोड़ पर खड़े होते हैं, उन्हें अपने शैक्षणिक एवं व्यावसायिक भविष्य के लिए किसी एक विषय समूह कृ जैसे कि विज्ञान, वाणिज्य, या कला कृ का चयन करना होता है।

इस महत्त्वपूर्ण निर्णय में विद्यार्थी अनेक मानसिक, सामाजिक और पारिवारिक दबावों के बीच उलझे रहते हैं। एक ओर अभिभावकों की अपेक्षाएँ होती हैं, वहीं दूसरी ओर स्वयं विद्यार्थी की रुचि, क्षमता, और जानकारी सीमित होती है। ऐसे में यदि उन्हें उचित मार्गदर्शन (ळनपकंदबम) न मिले, तो वे कई बार ऐसा विषय चुन लेते हैं, जो उनके भविष्य की दिशा और दक्षता से मेल नहीं खाता। परिणामस्वरूप न केवल शैक्षणिक असफलता आती है, बल्कि आत्मग्लानि और करियर असंतोष भी उत्पन्न होता है।

शिक्षण संस्थानों, विशेषतः माध्यमिक स्तर के विद्यालयों, में करियर मार्गदर्शन और विषय चयन के पूर्व काउंसलिंग की आवश्यकता लगातार अनुभव की जा रही है। लेकिन व्यवहार में इसकी अनुपस्थिति अधिक दिखाई देती है, जिससे छात्र अपने निर्णय स्वयं या सीमित जानकारी के आधार पर लेते हैं।

अतः इस शोध का उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि कक्षा 10 के विद्यार्थियों में विषय चयन के दौरान क्या मार्गदर्शन दिया जा रहा है, उसकी स्थिति क्या है, और उसकी अनुपस्थिति से क्या प्रभाव पड़ रहा है। यह अध्ययन न केवल छात्रों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को समझने में सहायक होगा, बल्कि शैक्षणिक नीति निर्धारकों, शिक्षकों और अभिभावकों को एक नई दिशा प्रदान करने में भी उपयोगी सिद्ध होगा।

''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर मस्तिष्क तथा आत्मा के सर्वांगीण सर्वोत्तम विकास से है।''**–महात्मा गाँधी**

'शिक्षा से तात्पर्य अर्न्तनिहित शक्तियों तथा बाह्य जगत के मध्य समन्वय स्थापित करने से है।''
–हरबर्ट स्पेंसर

शिक्षा किसी समाज में चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा मनुष्य जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला– कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्तृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है, इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनो निरन्तर विकास करते है।

अतः अंत में यह कह सकते हैं कि शिक्षा अपने चारों ओर के सीखने की एक प्रक्रिया है। यह हमें किसी भी वस्तु को समझने, किसी भी समस्या से निपटने और पुरे जीवन भर विभिन्न आयामों में संतुलन आयोमों में संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। शिक्षा सभी मनुष्यों का सबसे पहला और सबसे आवश्यक अधिकार है। बिना शिक्षा के हम अधुरे है और हमारा सारा जीवन बेकार है। शिक्षा हमें अपने जीवन में एक लक्ष्य निर्धारित करने और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यह हमारे ज्ञान, कुशलता, आत्मविशवास और व्यंतिव में सुधार करती है। यह हमारे जीवन में दुसरों से बात करने की बौद्धिक क्षमताको बढ़ाती है। शिक्षा परिकपक्वता लाती है और समाज के बदलते परिवेश में रहना सिखाती है। यह सामाजिक विकास आर्थिक वृद्धि और तकनीकी उन्नति की रास्ता है।

2. निर्देशन का अर्थ

मनुष्य एक सामाजिक, बृद्धिमान और विवेकशाील प्राणी है। इसी के आधार पर वह संसार के अन्य प्राणियों से बिल्कुल भिन्न है। वह बुद्धि के बल पर ही समाज के पर्यावरण और अन्य प्राणियों के साथ सामंजस्य स्थापित करता है। इसे सामना करना पड़ता है जिसके लिए उसे अपने से बड़ो का सहयोग लेना पड़ता है। इस सहयोग के आधार पर वह समस्याओं के सम्बन्ध में उचित निष्कर्ष निकालने में अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में उसे आसानी होती है। निर्देशन के आधार पर ही व्यक्ति अपनी योग्यताओं, क्षमताओं और कौशलों के बारे में ज्ञान प्राप्त करता है और अपने में निहित क्षमताओं का उचित प्रयोग करके अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि निर्देशन का उद्देश्य व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करना नहीं है बल्कि इसके आधार पर व्यक्ति की क्षमताओं का उसे बोध कराकर उसे इस योग्य बनाना होता है। जिससे वह अपनी समस्याओं का समाधान खोजने में सक्षम हो जाए। निर्देशन की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। परन्तु फिर भी कुछ परिभाषाएँ अग्रलिखित है जिससे इसके आशय को समझा जा सकता है–

1) **कार्टर वी. गुड** ने शिक्षा के शब्दकोष 1959 में निर्देशन की परिभाषा निम्नलिखित शब्द में दी है– "निर्देशन गतिशील पारस्परिक सम्बन्धों की प्रक्रिया है। जो व्यक्ति के दृष्टिकोणों और व्यवहारों को प्रभावित करने के लिए डिजाइन की जाती है।"

3. शिक्षा में निर्देशन

शिक्षा के निर्देशन का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनकी शैक्षिक, व्यावसायिक तथा वैयक्तिक-सामाजिक ज़रूरतों के अनुरूप मार्गदर्शन देना है ताकि वे सूचित निर्णय लेकर अपनी पूर्ण क्षमता विकसित कर सकें। यह प्रक्रिया न केवल शैक्षणिक-उपलब्धि और करियर-तैयारी में सहायक होती है, बल्कि मानसिक-सामाजिक कल्याण और आत्म-नियमन कौशल भी सुदृढ़ करती है।

शैक्षिक निर्देशन – सही विषय-पाठ्यक्रम चयन, अध्ययन-रणनीति, परीक्षा-तैयारी और सीखने की बाधाओं का समाधान।

व्यावसायिक निर्देशन – **रु**चि-योग्यता आकलन, उद्योग-सूचना, इंटर्नशिप/प्रशिक्षण के अवसर और करियर-पथ निर्धारण।

व्यक्तिगत-सामाजिक निर्देशन – आत्म-पहचान, भावनात्मक-समायोजन, सहानुभूति, संघर्ष-प्रबंधन और मानसिक स्वास्थ्य सहायता।

4. अध्ययन की आवश्यकता

1 व्यक्तिगत विकास के लिए
प्रत्येक विद्यार्थी के समग्र विकास हेतु उचित मार्गदर्शन आवश्यक है, जिससे वह अपनी योग्यताओं एवं अभिरुचियों के अनुसार विषय का चयन कर सके।

2 सामाजिक समायोजन हेतु
विद्यार्थी का सामाजिक एवं भावनात्मक संतुलन दिशा–निर्देश से बेहतर बनता है, जिससे वह अपने निर्णयों में सामाजिक अपेक्षाओं और आत्मिक संतोष का समन्वय कर पाता है।

3 करियर निर्धारण के लिए
बिना मार्गदर्शन के लिए गए विषय चयन निर्णय छात्र को भविष्य में करियर असमंजस और असंतोष की ओर ले जा सकते हैं।

4 शैक्षणिक सफलता की दृष्टि से
अध्ययन में रुचि और विषय की अनुकूलता, मार्गदर्शन से बेहतर सुनिश्चित की जा सकती है, जिससे शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार होता है।

5 दसवीं कक्षा के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए
यह वह समय होता है जब विद्यार्थी के जीवन की मुख्यधारा निर्धारित होती है कृ ऐसे में एक सटीक मार्गदर्शन उसकी दिशा तय करने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

अतः, यह अध्ययन इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह न केवल विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता को समझने में सहायक होगा, बल्कि शिक्षकों, अभिभावकों और नीति–निर्माताओं को भी विषय चयन के समय निर्देशन की अनिवार्यता के प्रति जागरूक करेगा।

5. संबंधित शोध साहित्य का अध्ययन

पूर्व में किए गए शोध कार्य निम्नलिखित है–

5.1 भारत में किए गए शोधकार्य–

1. **नीता एंड्रिया निहाला ने सन् (2015)** में ''ए रिसर्च ऑन द एजूकेशनल काउसिलिंग एंड कैरियर गाइडेंस नाम शीर्शक पर शोध कार्य किया। निश्कर्श – 1. एक समाजशास्त्रीय शोध का नतीजा 900 छात्रों की संख्या में के दो क्षेत्रों में किया गया। आवश्यक परामर्श और व्यवसायिक मार्गदर्शन की उपयोगिता को रेखाकिंत करने के लिए । 2. 17.5 प्रतिशत उत्तरदात्ताओं ने कहा कि उन्होंने स्कूल में परामर्श प्राप्त नहीं किया है। 12.7 प्रतिशत ने आंशिक रूप से परामर्श प्राप्त किया जबकि कुछ विद्यार्थियों ने मनोवैज्ञानिकों के द्वारा परामर्श प्राप्त किया। 3. 63.7 प्रतिशत

लोगों ने कहा कि उन्होंने उच्च विद्यालय स्तर पर कैरियर मार्ग दर्शन पर परामर्श प्राप्त नहीं किया केवल 36.3 प्रतिशत ने कहा कि उन्होंने कैरियर परामर्श प्राप्त किया था। 4. 60.0 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्होंने विद्यालय में काफी परामर्श प्राप्त किया परंतु यह किसी योग्य व्यक्ति द्वारा नहीं दिया गया था। जैसे किसी कक्षा अध्यापक, मनोवैज्ञानिक तथा विद्यालय परामर्शक द्वारा। यद्यपि अधिकांश लोग जो माध्यमिक शिक्षा पूरी कर चुके हैं उन्हे इनके द्वारा कैरियर परामर्श दिया जाता तो यह बहुत ही अच्छा होता। अंतिम वर्श के लगभग 60.0 प्रतिशत विद्यार्थियों ने दावा किया है कि इस प्रकार के कार्य ने उन्हें प्रभावित नहीं किया है।

2. **सिंह, रितु (2014)** ने 'जन्मक्रम पर आधारित निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकता, विशय पर शोधकार्य कर निश्कर्श निकाला कि जन्मक्रम का निर्दशन सम्बन्धी आवश्कताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

3. **देशमुख, के (2014)** ने शारीरिक व विकलांग बालकों की समाज में निर्देशन आवश्यकता शीर्षक पर पी. एच.डी. स्तरीय शोध कार्य किया। निष्कर्ष – 1. शारीरिक अयोग्य तथा सामान्य विद्यार्थियों के निर्देशन आवश्यकता में सार्थक अन्तर नहीं। पाया गया। 2. उच्च स्वधारणा वाले विद्यार्थियों में दूसरों पर निर्भर रहने की भावना कम पायी गयी।

4. **पंडित, आई.ए (2010)** ने युवकों की निर्देशन आवश्कता और समायोजन शीर्शक पर शोध कार्य किया। 1. किशोरों का गृहस्थ सामाजिक, संवेगात्मक व विश्वविद्यालयी समायोजन व निर्देशन सभी क्षेत्रों ने भिन्नता थी। 2. समायोजन व निर्देशन के सभी क्षेत्रों में अपेक्षाकृत विद्यालय स्तर सर्वाधिक अच्छा था।

5. **कुमार, अनूप तथा कुमार, राजेश (2010)** ने हिमाचल प्रदेश के जवाहर नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत किशोर विद्यार्थियों का निर्देशन संबंधी आवश्यकता विषय पर शोध कार्य किया। निश्कर्श 1. जवाहर नवोदय विद्यालय में अध्ययनरत छात्र तथा छात्राओं के व्यवसायिक निर्देशन बहुत आवश्यक है। 2. छात्राओं की तुलना में छात्रों को मनोवैज्ञानिक निर्देशन की आवश्यकता अधिक है।

5.2 विदेश में किए गए शोधकार्य

1.एल. पेरी जॉय डी निकॉलस (2014) " ने हाई स्कूल विद्यार्थियों का लोगों पर अविश्वास का कारण एक अध्ययन जिसमें शिक्षा के मूल्यों एवं माता–पिता की आकांक्षाओं के अनुसार शारीरिक व सामाजिक शिक्षा ग्रहण करेन कपर ध्यान दिया गया।

2.खेमलानी सुश्री जुगनू (2013–14) "ने विज्ञान विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण अध्ययन आदतों का शैक्षिक उपलब्धि एवं आकांक्षा स्तर पर प्रभाव का अध्ययन कर निष्कर्ष ज्ञात किया। निष्कर्ष – अध्ययन आदतों का निर्देशन की उपेक्षा शैक्षिक उपलब्धि पर अधिक प्रभाव होता है।

3 कैलिफोर्निया शिक्षा विभाग (2013) ने "रिसर्च ऑन स्कूल काउंसलिगं इफेन्टीवनेस" विषय पर सोध कार्य किया। निष्कर्ष – विद्यालयों द्वारा समय–समय पर परामर्शक कायक्रमों का आयोजन करके विद्यार्थियों को निर्देशन दिया जाना चाहिए जिससे विद्यार्थी अपनी भावात्मक, सामाजिक अथवा व्यवहारिक समस्याओं का निवारण करके आगे बढ़ सके।

4. फ्रेड सी. लुनेनवर्ग (2010) ने विद्यालय निर्देशन और परामर्श सेवाओं पर शोध पत्र सम हॉस्टॉन स्टटे विश्वविद्यालय में प्रस्तुत किया। निष्कर्ष – विद्यालय में आयोजित निर्देशन और परामर्श कायक्रर्म विद्यार्थियों की योग्यता में वृद्धि करने वाले उनकों समझने, उनकी समस्याओं को हल करने वाले पाये गये। अधिकतर निर्देशन सेवाओं में विद्यार्थियों का जानकारी देना, उन्हें आगे बढ़ने के लिए परामर्श देना शामिल पाया गया।

5. मोहम्मद, माहेर, मोहम्मद एम.ओमार (2009) ने "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की निर्देशन आवश्यकताओं का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। इसका प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों की व्यक्तिगत सामाजिक शैक्षिक और व्यवसायिक आवश्यकताओं का पता लगाना और उन पर विचार करना था। निष्कर्ष –विद्यार्थियों की अधिकतर समस्याएँ शैक्षिक व व्यवसायिक निर्देशन आवश्यकताओं से सम्बन्धित पायी गई। किशोरों क समस्याओं को हल करने के लिए प्रशिक्षित विशेषज्ञों द्वारा सम्पूर्ण निर्देशन कायर्क्रम के आयोजन और माध्यमिक विद्यालय में पाठ्यक्रम के विस्तार की आवश्यकता पायी गयी।

6. अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लघुशोध के अध्ययन में निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गए है–

1) कक्षा दसवीं के शासकीय व अशासकीय छात्रों में परिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर विषय चुनने में निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

2) कक्षा दसवीं के शासकीय व अशासकीय छात्राओं में मनोवैज्ञानिक आधार पर विषय चुनने में निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

3) कक्षा दसवीं के शासकीय व अशासकीय छात्रों में मनोवैज्ञिनक आधार पर विषय चुनने में निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

4) कक्षा दसवीं के शासकीय व अशासकीय छात्राओं में परिवारिक पृष्ठभूमि आधार पर विषय चुनने मे निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

5) कक्षा दसवीं के शासकीय व अशासकीय छात्रों एवं छात्राओं के सर्वागीण विकास में निर्देशन की उपयोगिता का अध्ययन करना।

6) कक्षा दसवीं के शासकीय व अशासकीय छात्रों में व्यवसायिक रूप में विकास से संबंधित निर्देशन की आवश्यकता का अध्ययन करना।

7. अध्ययन की परिकल्पनाएं

अध्ययन की प्रमुख परिकल्वनाएँ निम्नलिखित है–

1) कक्षा दसवीं के शासकीय व अशासकीय विद्यालय में पारिवारिक पृष्ठ भूमि के आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अंतर पाया जाएगा।

2) कक्षा दसवीं के शासकीय व अशासकीय विद्यालय में मनोवैज्ञानिक आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अंतर पाया जाएगा।

3) कक्षा दसवीं के शासकीय व अशासकीय विद्यालय के विद्याथियों में शैक्षिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अंतर पाया जाएगा।

4) कक्षा दसवीं के शासकीय व अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यवसायिक रूप से विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अंतर पाया जाएगा।

8. अध्ययन का क्षेत्र व परिसीमन

प्रतिभागियों का परिसीमन (Participant Delimitation)-

इस लघु शोध अध्ययन में केवल 100 विद्यार्थियों (50 लड़के और 50 लड़कियाँ) को शामिल किया जाएगा। अध्यापक, अभिभावक या अन्य शिक्षा से संबंधित व्यक्तियों को शामिल नहीं किया जाएगा।

क्रमांक	विद्यार्थी	शास. शाला	निजी शाला	श्योग
1	छात्र (बालक)	25	25	50
2	छात्रा (बालिक)	25	25	50
कुल योग		**50**	**50**	**100**

9. शोध विधि

प्रस्तुत लघुशोध प्रवंध की समस्या के अध्ययन के लिए शोधकर्ता द्वारा यादृच्छिक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है

10. जनसंख्या

जनसंख्या शब्द का अर्थ देश में रहने वाले लोगों से लिया जाता है। लेकिन सांख्यिकी व शोध में जनसंख्या शब्द का अर्थ भिन्न होता है। जनसंख्या का तात्पर्य सम्पूर्ण इकाइयों के निर्धारण से होता है। जनसंख्या की संख्या में सभी प्रकार (समस्या में निहित समूह) के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है वह सजातीय होते है। सांख्यिकी में इस शब्द का प्रयोग उस पूरे क्षेत्र के लिए किया जाता है जिसका अन्वेषक ने अपने अनुसंधान के लिए लिया है। समग्र सीमित व असिमित हो सकते हैं। शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध में जनसंख्या के लिए कक्षा 9वीं एवं दसवीं के छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

11. न्यादर्श

न्यादर्श सम्पूर्ण जनसंख्या का वह अंश होता है जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओ का प्रतिबिम्ब रहता है । न्यादर्श का तात्पर्य सम्पूर्ण अध्ययन के लिए ऐसी इकाई को पृथक करना जो संपूर्ण का प्रतिनिधित्व करती है तथा सम्पूर्ण की अपेक्षा छोटी होती है । न्यादर्श प्रविधि शोध को व्यवहारिक तथा समय धन शक्ति की दृष्टि से मितव्ययी बना देती है ।

फैक येट्स के अनुसार –

''न्यादर्श शब्द इकाईयो के एक समूह या सम्पूर्ण सामग्री के एक अंश के लिए सुरक्षित होना चाहिए जिसको इस विश्वास के उपर चुना गया है।''

गुड एवं हंड के अनुसार –

''एक न्यादर्श जैसा कि नाम से स्पष्ट करता है । सम्पूर्ण समूह का निम्नतम प्रतिनिधित्व है।''

प्रस्तुत लघुशोध कार्य में न्याय हेतु चयनित दुर्ग जिले के चयनित शासकीय और निजी विद्यालय इस प्रकार हैं–

क्रमांक	चयनित विद्यालय का नाम	छात्र	छात्रा	कुल
1.	ज्ञानोदय पब्लिक स्कूल बेमेतरा	25	25	50
2.	शासकीय उच्च माध्य. विद्यालय नांदघाट	25	25	50
	कुल योग	50	50	100

12. उपकरण

उपरोक्त विशेषताओं को ध्यान में रखकर शोधकर्ता ने प्रस्तुत लघु शोध में डॉ एस पी कुलश्रेष्ट द्वारा निर्मित शैक्षिक रूचि प्रपत्र उपकरण का प्रयोग किया गया है।

13. संख्यिकीय विश्लेषण

मध्यमान (Mean) $M = \frac{\Sigma X}{N}$

प्रमाप विचलन – S.D. = $\sqrt{\frac{\Sigma d^2}{N}}$

क्रांतिक अनुपात – $CR = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$

14. परिकल्पना का प्रमाणीकरण

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध **"कक्षा दसवी के विद्यार्थियों में विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन"** के उद्देश्य की पुष्टि हेतु परिकल्पनाओं की पुष्टि की जाती है। जिसमें शोधकर्ता द्वारा माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि संबंधी जानकारी हेतु साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण किया गया है। जिसके आधार पर प्राप्त प्रदत्तो का प्रतिशत निकाला गया है। जिसे निम्न प्रकार के तालिका के द्वारा स्पष्टीकरण किया गया है–

1. परिकल्पना क्रमांक HO_1

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की नैतिक शिक्षा और उनकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 1.1

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में पकरवारिक पृष्ठ भूमि के आधर पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता का चर, संख्या, प्रमाप विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	विद्यार्थी की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थक या सार्थक नहीं
शासकीय	50	23.68	5.14	3.57	सार्थक अंतर पाया गया।
अशासकीय	50	27.72	6.10		

$df=98$

उपरोक्त सारणी दर्शाती है कि 50 शासकीय व 50 अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में पारिवारिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता के प्राप्तांको का मध्यमान 23.68 व 27.72 उनका प्रमाप विचलन 5.14 व 6.10 है। शासकीय व अशासकीय विद्यार्थियों में पारिवारिक विकास से सम्बंधित विषय चुनने में प्राप्ताको के माध्य में अंतर है। शासकीय विद्यालयों के विद्‌यार्थियो मं पारिवारिक पृष्ठ भूमि से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अशासकीय विद्यालयों से कम है।

अतः शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में पारिवारिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अंतर की सार्थकता के लिए बण्तण मूल्य की गणना की गई जो 3.57 प्राप्त हुआ। 98 df के लिए 0.05 स्तर पर. का टेबल मूल्य = 1.98

अतः कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में पारिवारिक पृष्ठ भूमि के आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अतंर पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं ।

आरेख क्रमांक 1.1

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में पारिवरिक पृष्ठ भूमि के आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता का चर, संख्या, एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

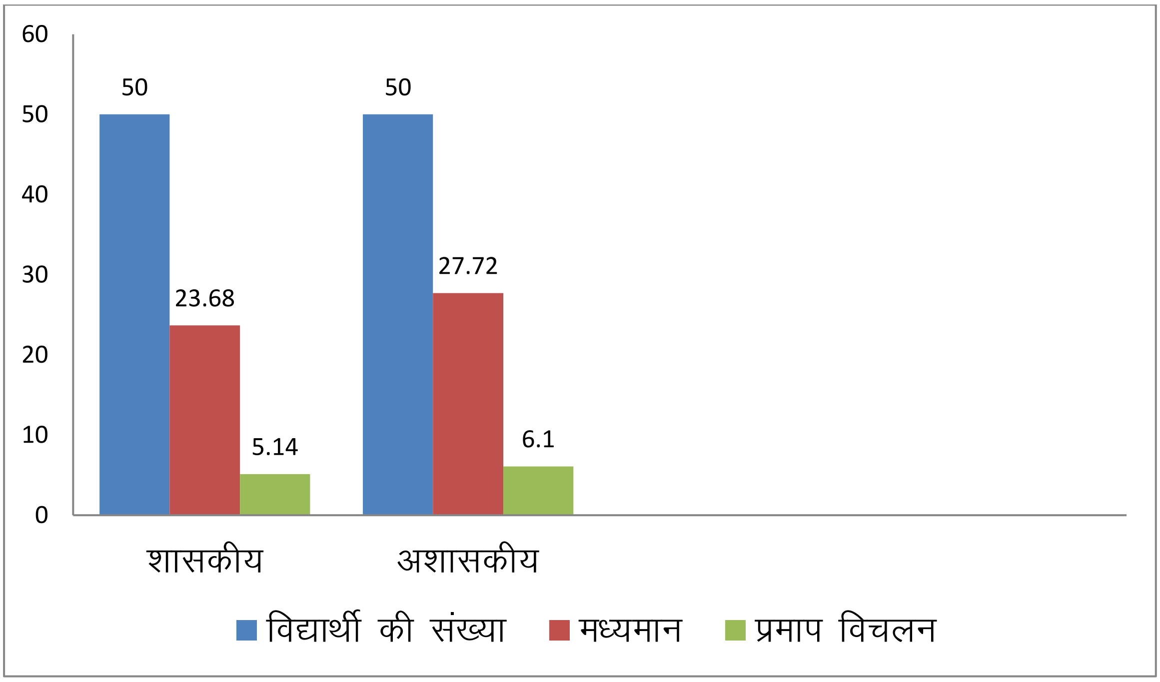

2. परिकल्पना HO_2

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में मनोवैज्ञानिक आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्कता में अंतर पाया जाएगा।

सारिणी क्रमांक 1.2

कक्षा दसवीं के शासकीस एवं अशासकीय विद्यालय में मनोवैज्ञानिक आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता चर, संख्या, प्रमाप विचलन,क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	विद्यार्थी की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (σ)	क्रातिक अनुपात (CR)	सार्थक या सार्थक नहीं
श्शासकीय	50	21.92	5.01	2.62	सार्थक अतंर पाया गया ।
अशासकीय	50	25.04	5.25		

df=98

उपरोक्त सारणी दर्शाता है कि 50 शासकीय व 50 अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक से सबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता के प्राप्तांको का माध्यमान 21.92 व 25.04 तथा उनका मानक विचलन 5.01 व 5.25 है। शासकीय व अशासकीय विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक विकास के संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की अवश्यकता में अशासकीय विद्यार्थी अधिक है। शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता CR मूल्य की गणना की गई जो 2.26 प्राप्त हुई है। 98 df के लिए 0.05 स्तर परा + का टेबल मूल्य = 1.98

अतः कक्षा दसवीं के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

अतः यह परिकल्पना क्रमांक अतः यह परिकल्पना स्वीकृत हुई।

आरेख क्रमांक 1.2

कक्षा दसवीं के “शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में मनोवैज्ञानिक आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता का चर, संख्या, एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

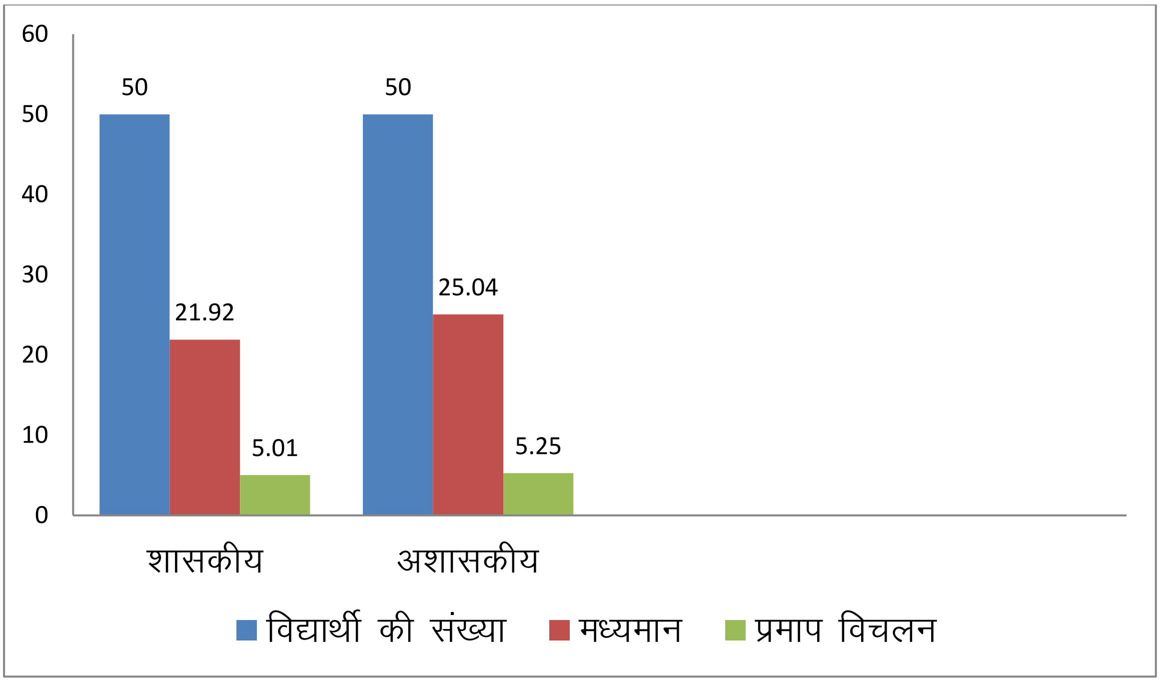

3. परिकल्पना HO_3

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

सारिणी क्रमांक 1.3

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास से संबंधित विशय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता का चर, संख्या, प्रमाप विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	विद्यार्थी की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (σ)	क्रांतिक अनुपात (CR)	सार्थक या सार्थक नहीं
शासकीय	50	23.42	7.21	2.01	सार्थक अंतर पाया गया।
अशासकीय	50	25.88	4.81		

df=98

उपरोक्त सारणी दर्शाती है कि 50 शासकीय व 50 अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास से संबंधित विशय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता के प्राप्तांकों का माध्यमान 20.42 व 25.88 उनका मानक विचलन 7.12 व 4.81 है। शासकीय व अशासकीय विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास से सम्बंधित विषय चुनने में प्राप्तांकों के माध्य में अंतर है। शासकीय विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अशासकीय विद्यालयों से कम है।

अतः शासकीयएवं अशासकीय विद्यालयों में शैक्षिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अंतर की सार्थकता के लिए *C.R.*

मूल्य की गणना की गई जो 2:01 प्राप्त हुआ। 98 *df* के लिए 0.05 स्तर पर + का टेबल मूल्य = 1. 98

अतः कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में शैक्षिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया गया।

अतः यह परिकल्पना स्वीकृत हुई।

आरेख क्रमांक 1.3

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में मनोवैज्ञानिक आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता का चर, संख्या, एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

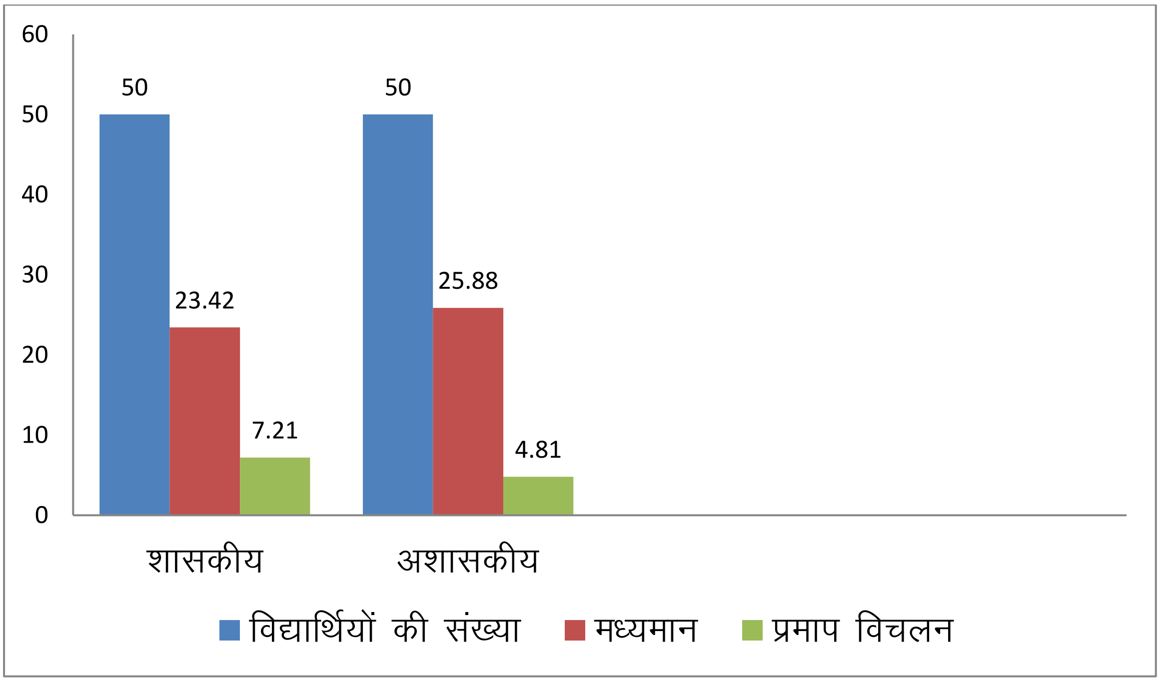

<u>4. परिकल्पना HO_4</u>

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यवसायिक रूप से विकास से संबंधित चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

सारिणी क्रमांक 1.4

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यवसायिक रूप से विकास से संबंधित विशय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता का चर, संख्या, प्रमाप विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	विद्यार्थी की संख्या	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (σ)	क्रांतिक अनुपात (CR)	सार्थक या सार्थक नहीं
शासकीय	50	26.44	4.80	0.90	सार्थक अंतर नही है।
अशासकीय	50	27.5	6.79		

$$df = 98$$

उपरोक्त सारणी दर्शाती है कि 50 शासकीय व 50 अशासकीय विद्यालय के विद्यालयों में व्यवसायिक विकास से संबंधित विशय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता के प्राप्तांकों का माध्यमान 26.44 व 27.5 उनका मानक विचलन 4.48 व 6.79 है। शासकीय व अशासकीय विद्यार्थियों में व्यवसायिक विकास से संबंधित विषय चुनने में प्राप्तांकों के माध्य में अंतर है। शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यवसायिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अशासकीय विद्यार्थियों से अधिक है।

अतः शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में व्यवसायिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अंतर की सार्थकता के लिए C.R.

मूल्य की गणना की गई जो 0.09 प्राप्त हुआ। 98 *df* के लिए 0.05 स्तर पर टेबल मूल्य से कम है।

अतः कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यवसायिक रूप से विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

आरेख क्रमांक 1.4

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में व्यवसायिक रूप से विकास से संबंधित विशय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता का चर, संख्या, एवं प्रमाप विचलन दर्शाने वाला आरेख

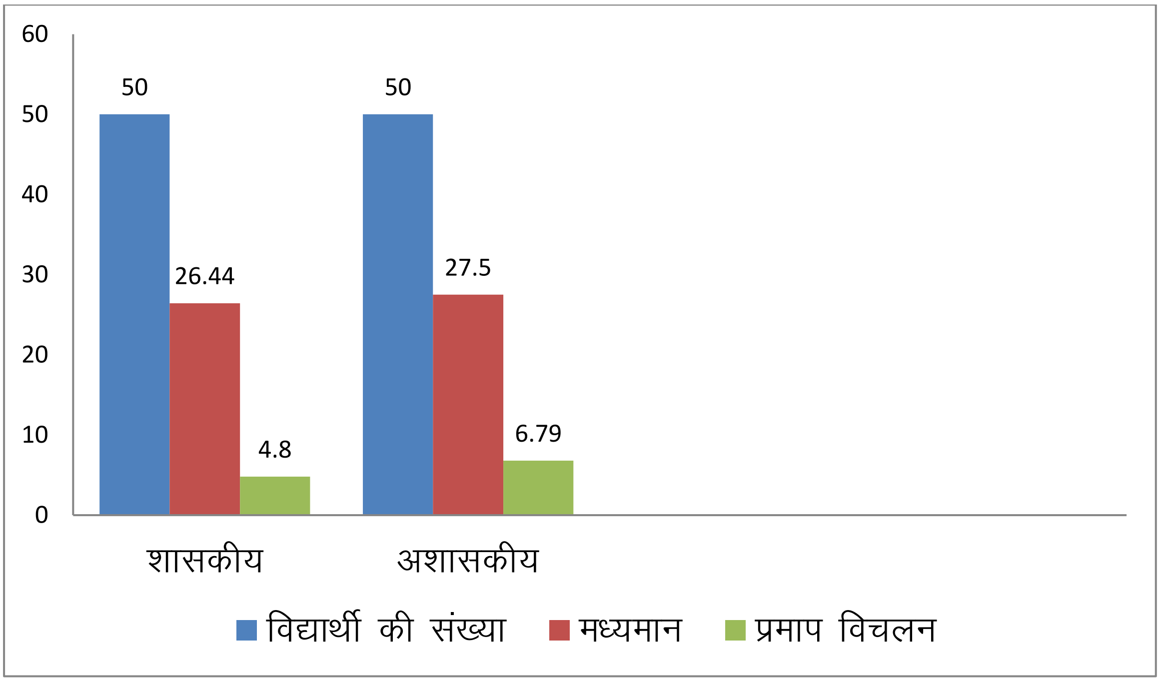

18. परिणाम एवं निष्कर्ष

निष्कर्ष के माध्यम से नवीन तथ्य सामने आते हैं एवं समस्याओं के समाधान प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत लघु – शोध प्रबंध के निष्कर्ष अधोलिखित है।

परिकल्पना क्रमांक HO_1

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में पारिवारिक पृष्ट भूमि के आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में सार्थक अतंर पाया जाएगा।

2. परिकल्पना HO_2

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में मनोंवैज्ञानिक आधार पर विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अंतर पाया जाएगा।

3. परिकल्पना HO_3

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में शैक्षिक विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अंतर पाया जाएगा।

4. परिकल्पना HO_4

कक्षा दसवीं के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय में व्यवसायिक रूप से विकास से संबंधित विषय चुनने हेतु निर्देशन की आवश्यकता में अंतर पाया जाएगा।

19. भावी शोध हेतु सुझाव

1) उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थी में कक्षा दसवीं के विद्यार्थी आते है। इस उम्र मे ही विद्यार्थी अपने भविश्य के प्रति सोचते है। यदि वे सही निर्देशन के प्रति जागरूक रहेंगे तो निश्चित ही इसका लाभ उठा पायेंगे।

2) विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के लिए आवश्यक है कि वे अपनी समस्याओं को बतायें ताकि समय रहते उनका निवारण किया जा सके।

3) विद्यार्थियों को दिए गये निर्देश या सुझाव से अपनी योग्यता व क्षमता का ज्ञान रखते हुए सही विकल्प का चुनाव करना चाहिए।

4) विद्यार्थियों को निर्देशन व परामर्श से संबंधित हो रहे कार्यों व कार्यक्रमों में अधिक से अधिक भाग लेने का प्रयास करना चाहिए।

5) समय–समय पर स्वयं का मूल्यांकन कर देखना चाहिए कि उन्हें किस क्षेत्र में परेशानी हो रही हे तथा उसके निवारण के लिए अपने शिक्षक परिवार या निर्देशकों से सहायता लेना चाहिए।

6) समय–समय पर शालाओं में हो रही गतिविधियों में भाग लेना व पूर्व जानकारी लेना चाहिए और उनके प्रति समेत रहना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल व अस्थाना, आर (1999). मनोविज्ञान व शिक्षा में मूल्यांकन. विनोद पुस्तक मंदिर।

2. (2007). बालक की विशिष्ट आवश्यकता एवं समग्रित शिक्षा, पृष्ठ क्रं 11–22।

3. कपिल, एच. के. (1992दृ1993). अनुसंधान विधियां. हरिप्रसाद भार्गव।

4. गैरेट, ह. (1985). शिक्षा व मनोविज्ञान में सांख्यिकीय. कल्याणी पब्लिशर्स।

5. गिजुभाई. (2001). बाल शिक्षण और शिक्षक, पृष्ठ क्रं 1–10।

6. पाठक, पी. डी. (वर्ष अनिर्दिष्ट). शिक्षा मनोविज्ञान. अग्रवाल पब्लिकेशन।

7. पाण्डेय, स. (2001). मूक बधिर बालकों का शैक्षिक और सामाजिक आर्थिक समायोजन. वसुंधरा प्रकाशन।

8. भटनागर, सी. (1999). शिक्षा के मनोविज्ञान आधार. लायल बुक डिपो।

9. माथुर, एस. एस. (2004). शिक्षा में मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मंदिर।

10. विष्ट, आ. र. (2004). विशिष्ट बालक. विनोद पुस्तक मंदिर।

11. सरीन, (2013–2014). शैक्षिक अनुसंधान विधियां, पृष्ठ क्रं 118–119।

12. सिंह, र. (2001). शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, पृष्ठ क्रं 128–129।

13. (वर्ष अनिर्दिष्ट). शिक्षा मनोविज्ञान एवं मापन. राधा प्रकाशन मंदिर प्रा. लि.।

14. हम्फी, एम. ए. (2008). मनोविज्ञान में शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी. अग्रवाल प्रकाशन।

15. उपाध्याय, र. (2016–2017). निर्देशन एवं परामर्श, पृष्ठ क्रं 155–171।

16. शर्मा, आर. ए. (2007). विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, पृष्ठ क्रं 165–189।

17. भटनागर, स. (1982–1983). शिक्षा मनोविज्ञान।

18. ओबराय, एस. सी. (2007). शैक्षिक तथा व्यवसायिक निर्देशन व परामर्श. लाल बुक डिपो।

19. शर्मा, आर. ए. (2007). वृतिक निर्देशन एवं रोजगार सूचना. आर. लाल बुक डिपो।

20. पाठक, पी. डी. (1982). शिक्षा मनोविज्ञान. विनोद पुस्तक मंदिर।